प्रकाशन तिथि : 15 मई, 2025
प्रेषण तिथि : 19 मई, 2025

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 29 | अंक 05 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

श्रेष्ठ लोगों को नेतृत्व सौंपने से दूर होंगी जनतंत्र की कमियां : संरक्षक श्री

(समारोह पूर्वक मनाया महाराव शेखा जी का 537वां बलिदान दिवस)

जयंतिया उन लोगों की मनाई जाती हैं जो सबको साथ लेकर चलते हैं, बिखरे हुए लोगों को जोड़ते हैं, अनाश्रित लोगों को आश्रय देते हैं। ऐसे ही महापुरुष महाराव शेखा जी की पुण्यतिथि हम आज मना रहे हैं। उनकी स्मृति को हम भूल नहीं सकते। शेखाजी के संघर्षमय जीवन और महान चरित्र के बारे में हमने सुना और जाना कि उन्होंने राजतंत्र के काल में भी शेखावाटी में श्रेष्ठ जनतंत्र स्थापित किया। आज जिस जनतंत्र में हम रह रहे हैं उसमें बहुत सी कमियां हैं जिनको ठीक करना आवश्यक है। इसका दायित्व राजनेताओं का है लेकिन उन नेताओं को चुनने का दायित्व हमारा है। इसलिए हम बिना किसी जाति-पांति के भेद के श्रेष्ठ लोगों को नेतृत्व सौंपना प्रारंभ करें तो यह कमियां दूर हो जाएंगी। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने 30 अप्रैल (अक्षय तृतीया) को जयपुर के कांस्टीट्यूशन क्लब में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित महाराव शेखा जी बलिदान दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि गीता के तीसरे अध्याय में भगवान कृष्ण ने कहा है कि - 'मेरे लिए कुछ भी प्राप्त करने के लिए शेष नहीं है फिर भी मैं सावधान होकर कर्म करता हूं।

यदि मैं ऐसा नहीं करूं तो मैं समाज में संकरता उत्पन्न करने का कारण बनूंगा।' श्रेष्ठ लोग जो मार्ग बना जाते हैं, उसका अनुसरण किया जाना चाहिए। जो ऐसा नहीं करते उनकी दुर्गति होती है। हम देख रहे हैं कि आज भारत के चारों ओर किस प्रकार का वातावरण है, किस प्रकार की चुनौतियां हैं। उन चुनौतियों का सामना करने के लिए नया मार्ग ढूंढने की आवश्यकता नहीं है। वह मार्ग हमारे पूर्वज बनाकर गए हैं, हमें तो केवल उनका अनुकरण करना है। दुष्ट हमेशा रहे हैं, हमेशा रहेंगे।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

संघप्रमुख श्री का दो दिवसीय सुरेन्द्रनगर (गुजरात) प्रवास

माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास 26-27 अप्रैल को गुजरात के सुरेन्द्रनगर में प्रवास पर रहे। इस दौरान सुरेन्द्रनगर में स्थित शक्तिधाम कार्यालय में संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में दो दिवसीय बैठक आयोजित हुई जिसमें उत्तर गुजरात, मध्य गुजरात, दक्षिण गुजरात व सौराष्ट्र - गोहिलवाड़ संभाग के स्वयंसेवक शामिल हुए। बैठक में उपस्थित स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि यह जो शक्तिधाम कार्यालय है, इसका महत्त्व तभी है जब हम यहां आते रहें, और संघकार्य करते रहें। कार्यालय होने से कार्य नहीं चलता बल्कि कार्य करने से कार्यालय चलता है। हम यहां आकर सक्रिय होकर संघ का कार्य करना प्रारंभ कर देवें और पूरे संसार में पूज्य तनसिंह का संदेश पहुंचाएं, तभी इस कार्यालय की सार्थकता है। उन्होंने कहा कि संघ का कार्य जीवन भर किया जाने वाला कार्य है। इसके लिए हमारा लगातार संघ के संपर्क में रहना आवश्यक है। यदि संपर्क टूट गया तो निराशा और निष्क्रियता का आगमन हो जाएगा और हमारी गति रुक जाएगी। इसलिए संघ के संपर्क में बने रहने के लिए हमें स्वयं भी प्रयत्नशील रहना है। बैठक में आगामी उच्च प्रशिक्षण की तैयारियों पर भी चर्चा की गई एवं गुजरात में संघ कार्य के विस्तार हेतु कार्ययोजना भी तैयार की गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

सिक्किम के राज्यपाल पहुंचे संघशक्ति

सिक्किम के राज्यपाल माननीय ओम प्रकाश माथुर 30 अप्रैल को श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति पहुंचे। उन्होंने माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर से भेंट की एवं विभिन्न विषयों पर चर्चा की। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी भी इस दौरान उपस्थित रहे।

केवल युद्ध नायक नहीं, एकता के प्रतीक भी हैं प्रताप: राजनाथ सिंह

(आंग्ल तिथिनुसार देशभर में उत्साह से मनाई वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती)

महाराणा प्रताप इतिहास के अद्वितीय योद्धा हैं जिन्होंने मातृभूमि की स्वतंत्रता और स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। छत्रपति शिवाजी महाराज की भूमि पर उनकी प्रतिमा का अनावरण होना हम सभी के लिए गर्व की बात है। इन महापुरुषों ने न केवल वीरता से देश के शत्रुओं से लड़ाई लड़ी, बल्कि समाज को एक साथ जोड़ने और राष्ट्रीय भावना को मजबूत करने के लिए काम किया। प्रताप की सेना में आदिवासी, मुस्लिम सहित सभी समुदायों का प्रतिनिधित्व

था। इसलिए वे केवल युद्ध नायक ही नहीं हैं, बल्कि एकता के प्रतीक भी हैं। उपर्युक्त बात 9 मई को महाराष्ट्र के संभाजीनगर में स्थित कनॉट गार्डन में महाराणा प्रताप की घुड़सवार प्रतिमा का अनावरण करते हुए देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि हमें इतिहास के नाम पर आधा सच पढ़ाया गया। अपने सच्चे नायकों का वास्तविक इतिहास हमें नहीं पढ़ाया गया। हमें ऐसे महापुरुषों के सही इतिहास को सामने लाकर उनके द्वारा दी गई प्रेरणा को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि संभाजीनगर नगर निगम द्वारा स्थापित वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप सिंह की यह 16 फुट ऊंची घुड़सवार प्रतिमा सभी को देशभक्ति की प्रेरणा देगी। (शेष पृष्ठ 2 पर)

श्रेष्ठ लोगों को नेतृत्व सौंपने से दूर होंगी जनतंत्र की कमियां : संरक्षक श्री

(पेज एक से लगातार)

उनसे संघर्ष श्रेष्ठ लोग ही कर सकते हैं। देश, समाज और मानवता के लिए हमारे पूर्वजों ने जो त्याग व बलिदान किया है, उन उदाहरणों को स्मरण रखते हुए हमें भी वैसा ही करना है। उन्होंने आगे कहा कि चाहे राम हों, कृष्ण हों या बुद्ध हों, उन्होंने अपने आप को बनाने की ही बात कही। पूज्य तनसिंह जी ने भी कहा - 'निज को ना बनाया तो जग रंच नहीं बनता।' आज भाषणों में अनेक प्रकार की बातें नेताओं द्वारा कही जाती हैं लेकिन कहने वाला स्वयं उन पर आचरण नहीं करता इसलिए उन बातों का प्रभाव दूसरों पर भी नहीं पड़ता। स्वयं श्रेष्ठ बनने पर ही अन्य लोगों पर प्रभाव पड़ता है। संघ पिछले 78 वर्षों से पूज्य तनसिंह जी के स्वप्न को पूरा करने का प्रयत्न कर रहा है लेकिन अभी बहुत कुछ करना शेष है। जो कार्य करना शुरू कर देगा लोग स्वतः उसके पीछे हो जाएंगे। विरोध व आलोचनाओं की परवाह किए बिना तीर की भांति अपने लक्ष्य की ओर जो बढ़ता जाता है, वही दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बनता है। हमारा ध्येय, नेता, ध्वज और इष्ट एक होना चाहिए। संघ इसी एकता को लाने के लिए कार्य कर रहा है। इसके लिए बालकों के, बालिकाओं के, अविवाहितों के, दंपतियों के अलग-अलग शिविर लगाकर उन्हें प्रशिक्षण देता है। पूरे भारतवर्ष में संघ का यह कार्य चल रहा है और धीरे-धीरे उसका प्रभाव भी दिखाई पड़ रहा है। हमारे सभी स्वयंसेवक श्रेष्ठ बन गए हों ऐसा तो नहीं है लेकिन उनके नन्हे-नन्हे कदम जिस प्रकार से आगे बढ़ रहे हैं उससे यह आशा दृढ़ होती है कि आने वाला कल निश्चित रूप से श्रेष्ठ होगा।

जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेंद्र सिंह ने कहा कि शेखा जी ने 12 वर्ष की आयु में ही शासन का दायित्व संभाल लिया था और उसके बाद उन्होंने अपने जीवन काल में 55 युद्ध लड़े। इनमें से एक भी युद्ध में वे पराजित नहीं हुए। इन 55 युद्धों में से एक भी युद्ध उन्होंने राज्य विस्तार अथवा धन संपत्ति के लिए नहीं किया, बल्कि प्रजा की पुकार पर अत्याचार को समाप्त करने के लिए ही उन्होंने यह सभी युद्ध किए। उनके शासनकाल में राजस्व की व्यवस्था इतनी सुंदर थी कि शेखावाटी को उस समय के सबसे संपन्न राज्यों में से एक माना जाता था। उस कालखंड में सांप्रदायिक सद्भावना, धर्मनिरपेक्षता और नारी सम्मान जैसे मूल्यों को अपनी शासन व्यवस्था का आधार बनाने वाले शेखाजी एक आदर्श क्षत्रिय थे। यह दुर्भाग्य की बात है कि ऐसे महान शासक और योद्धा का इतिहास हमें पढ़ाया नहीं गया। उन्होंने कहा कि समाज केवल एक जाति का नाम नहीं है बल्कि वह ऐसा समूह है जिसका अपना एक चरित्र होता है और जो समस्त मानव समुदाय के कल्याण हेतु सद्कर्म करता है। भारत की संस्कृति शांति, सद्भाव और सहयोग की संस्कृति है। शरीर की व्यवस्था और आत्मा की सिद्धि हेतु उत्कृष्ट कर्मयोजना प्रस्तुत करने का कार्य भारत ने ही किया है। इस संपूर्ण व्यवस्था के संरक्षण की भूमिका क्षत्रिय समाज ने निभाई। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि राजस्थान की धरती पर सदैव ऐसे वीर पैदा हुए जो अपने ओज से इतिहास पर छाप छोड़ गए। महाराव शेखा जी भी ऐसे ही महापुरुष थे और वे हम सभी के लिए आज भी प्रेरणास्रोत हैं। यह दुख और दुर्भाग्य की बात है कि हमारे इतिहास को विकृत कर दिया गया जिसके कारण हम अपने वीर बलिदानियों के सही इतिहास से बहुत समय तक अनभिज्ञ रहे। यदि हम अपने वीरों का, बलिदानियों का सम्मान नहीं करेंगे तो आने वाली पीढ़ी को सही दिशा नहीं मिलेगी। शेखाजी केवल वीर ही नहीं बल्कि कुशल प्रशासक भी थे। अपने शासन में उन्होंने सामाजिक समरसता और धर्मनिरपेक्षता को विशेष महत्व दिया। ऐसे महापुरुषों का स्मरण करना हमारा कर्तव्य है। भारत के ऐसे महापुरुषों की महानता को नकारने, उनके प्रति अश्रद्धा का निर्माण करने के जो प्रयास आज कुछ तत्वों द्वारा किए जा रहे हैं वे अत्यंत निंदनीय हैं। राष्ट्र नायकों का किसी भी प्रकार का अपमान कोई भी भारतीय सहन नहीं करेगा। भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया ने कहा कि शेखा जी ने क्षत्रिय वंश की बलिदान की परंपरा को कायम रखा। केवल 12 वर्ष की आयु में शासन संभालना उनके जज्बे को दिखाता है। नारी के सम्मान के लिए इतना संघर्ष करने का बिरला उदाहरण शेखा जी के जीवन में ही मिलता है। अंग्रेजों ने हमारे समाज में फूट डालने की नीति अपनाई और मैकाले ने भारतीय इतिहास और संस्कृति को विकृत करने के लिए पाश्चात्य विचारधारा पर आधारित शिक्षा नीति बनाई। उसी के प्रभाव के कारण आज भी भारतीय समाज में वैचारिक संघर्ष की स्थिति बनी हुई है। इस संघर्ष में हमें भावी पीढ़ी को अपने वास्तविक इतिहास से परिचित कराना होगा। अपनी संस्कृति, इतिहास और परंपराओं को नई पीढ़ी तक पहुंचाना होगा जिससे उन्हें प्रेरणा प्राप्त हो सके और उनका विवेक जागृत हो सके। महाराव शेखा जी के 537वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में पूर्व न्यायाधिपति आर एस राठौड़ एवं पूर्व सांसद राम कुमार वर्मा सहित सर्व समाज के अनेकों गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी ने संघ के संस्थापक एवं प्रथम विधानसभा के संयुक्त विपक्ष के नेता रहे पू. तनसिंह जी द्वारा रचित 15 पुस्तकें विधानसभा पुस्तकालय के लिए विधानसभा अध्यक्ष देवनानी जी को भेंट की। कार्यक्रम का संचालन संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने किया। शेखा जी के निर्वाण स्थल रलावता गांव में भी उनका बलिदान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जयपुर ग्रामीण सांसद एवं शेखाजी संस्थान के अध्यक्ष राव राजेंद्र सिंह ने कहा कि शेखा जी ने अपना पूरा जीवन अपनी प्रजा को समर्पित कर दिया था। उन्होंने त्यागपूर्ण और मर्यादित जीवन जीते हुए नारी सम्मान हेतु संघर्ष का आदर्श स्थापित किया। इतिहासकार महावीर पुरोहित ने शेखाजी का विस्तृत इतिहास श्रोताओं के सामने रखा। अभिमन्यु सिंह राजवी, जालम सिंह आसपुरा, राजपूत सभा के जिला अध्यक्ष मदन सिंह गोगावास, शक्ति सिंह बांदीकुई, भाजपा नेता गजानंद कुमावत सहित अनेकों वक्ताओं ने कार्यक्रम को संबोधित किया और महाराव शेखाजी को कौमी एकता व सामाजिक सद्भाव का रक्षक योद्धा बताते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। संस्था के सचिव संपत सिंह धमोरा ने कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला। जयपुर के भवानी निकेतन में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी इस अवसर पर सर्व धर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया।

केवल युद्ध नायक नहीं, एकता के प्रतीक भी हैं प्रताप: राजनाथ सिंह

(पेज एक से लगातार)

महाराणा प्रताप एक सच्चे देशभक्त थे जिन्होंने अंत तक मातृभूमि के लिए संघर्ष किया। इस अवसर पर मंत्री संजय शिरसाट, विपक्ष के नेता अंबादास दानवे समेत अनेकों सांसद और विधायक मौजूद रहे। उत्तर प्रदेश के बदायूं जिले के उझानी में भी महाराणा प्रताप की प्रतिमा का अनावरण वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप महासभा के तत्वावधान में 9 मई को किया गया। प्रतिमा का अनावरण करते हुए केंद्रीय राज्य मंत्री बीएल वर्मा ने कहा कि महाराणा प्रताप शौर्य और साहस के प्रतीक हैं। आज उनके जीवन और विचारों से प्रेरणा लेकर समाज को नई दिशा देने की आवश्यकता है। महासभा के उपाध्यक्ष अमित प्रताप सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। प्रतिमा अनावरण के पश्चात नगर में शोभायात्रा भी निकाली गई। मध्य प्रदेश के इटारसी में भी स्थानीय राजपूत समाज द्वारा महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। जयंती समारोह का प्रारंभ शाम 5:00 बजे शहर के ऑडिटोरियम में शस्त्र पूजा के साथ हुआ। इसके पश्चात अनुशासित रैली के रूप में समाजबंधु जयस्तंभ चौक पहुंचे जहां पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम को सांसद दर्शन सिंह चौहान, राज्यसभा सांसद माया नारोलिया, विधायक सीतासरन शर्मा आदि ने संबोधित किया और कहा कि राजपूत समुदाय सदैव राष्ट्र की रक्षा में अपनी भूमिका निभाता आया है। महाराणा प्रताप हमारे राष्ट्र के शौर्य के अमर प्रतीक हैं जिनके

प्रति सभी भारतवासी श्रद्धा रखते हैं। राजपूत युवा संगठन नोएडा के तत्वावधान में नोएडा में स्थित बारातघर में प्रताप जयंती मनाई गई। इस अवसर पर नोएडा में शोभा यात्रा भी निकाली गई। मदन चौहान (पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार) ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमें महाराणा प्रताप के आदर्शों को अपने जीवन में ढालना चाहिए और देश के हित में ही जीवन जीना चाहिए। सतेंद्र सिसोदिया ने कहा कि महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज चौहान और उनके जैसे अन्य राजपूत योद्धाओं की वीरता की

गाथाएं सदा अमर रहेंगी और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेंगी। ठाकुर पूरण सिंह (किसान मजदूर संगठन) ने कहा कि हमें राजनीतिक दलों से ज्यादा समाज को मजबूत करने पर ध्यान देना चाहिए। आयोजन समिति के अशोक चौहान और महेश चौहान ने सभी का आभार व्यक्त किया। उत्तर प्रदेश के रामपुर में स्थित फर्स्ट इंप्रेशन स्कूल में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के तत्वावधान में प्रताप जयंती के उपलक्ष में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। संस्था के पश्चिम में उत्तर प्रदेश अध्यक्ष देवेंद्र सिंह ने कहा कि देश की सेना को जब भी आवश्यकता हो तो संस्था के सदस्य रक्तदान के लिए तैयार रहेंगे। जिलाध्यक्ष राजेंद्र सिंह ने युवाओं से महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। स्थानीय विधायक आकाश सक्सेना भी कार्यक्रम में शामिल हुए और रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। (शेष पृष्ठ 6 पर)

जोधपुर, बाड़मेर व जैसलमेर की संभागीय बैठकें

श्री क्षत्रिय युवक संघ के बाड़मेर संभाग की संभागीय बैठक 3 मई को बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में आयोजित हुई जिसमें संभाग के आठ प्रांतो से प्रांतप्रमुख स्वयंसेवकों सहित शामिल हुए। संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली ने वर्ष भर में संभाग में हुए संघकार्य की जानकारी दी एवं आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर की तैयारियों पर चर्चा की। वरिष्ठ स्वयंसेवक देवी सिंह माडपुरा ने स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए कहा कि संघ में आत्मावलोकन व आत्मचिंतन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए हम सभी को निरंतर यह जांच करते रहना चाहिए कि हम कितनी निष्ठा और ईमानदारी से संघकार्य कर रहे हैं। कृष्ण सिंह रानीगांव ने स्वयंसेवकों से नियमित रूप से शाखा में आने एवं संघ के संपर्क में रहने की बात कही। कार्यक्रम के अंत में दीप सिंह रणधा द्वारा मारवाड़ रत्न पुरस्कार से सम्मानित होने के उपलक्ष्य में स्नेह भोज रखा गया। जैसलमेर संभाग की संभागीय बैठक जैसलमेर शहर स्थित तनाश्रम कार्यालय में 29 अप्रैल को आयोजित हुई। संभाग प्रमुख गणपत सिंह अवाय ने बैठक में संभाग में हुए संघ कार्य की समीक्षा की एवं उदयपुर में आयोजित होने जा रहे बालकों के उच्च प्रशिक्षण शिविर एवं बालिकाओं के माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर हेतु संपर्क में तेजी लाने के बात कही। 26 अप्रैल को जोधपुर संभाग की संभागीय बैठक जोधपुर शहर में स्थित तनायन कार्यालय में आयोजित हुई। महेंद्र सिंह गुजरावास के संचालन में संपन्न बैठक में आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर में संभाग के पात्र स्वयंसेवकों से संपर्क करने सहित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई।

नीमच में मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर संपन्न

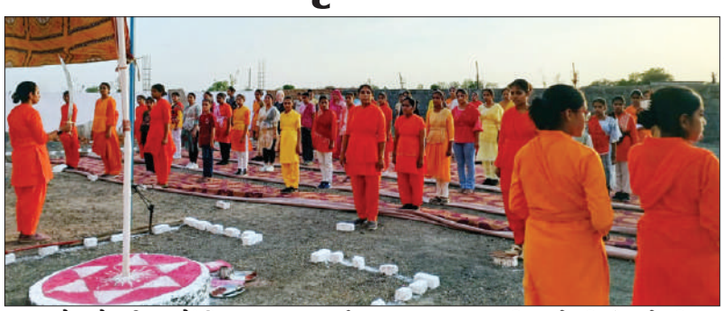

मध्य प्रदेश के नीमच में स्थित राजपूत धर्मशाला, भादवा माता में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर 1 से 4 मई तक आयोजित हुआ। विष्णु कंवर झांझड़ ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि अपने इतिहास, संस्कृति और धर्म से हमें परिचित होना चाहिए। उनसे परिचित होने पर ही हमें उन जीवन मूल्यों का ज्ञान होगा जिन्हें हमारे पूर्वजों ने अपना आदर्श बनाया था। उन जीवन मूल्यों को जानकर उन्हें व्यवहार में ढालने का प्रशिक्षण आपको इस शिविर में दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आप आज बालिका हैं लेकिन आगे जाकर आपको माता का भी दायित्व निभाना है। माता के रूप में आप अपनी संतान के भविष्य की निर्माता की भूमिका निभाएंगी। इसलिए समाज की भावी पीढ़ी के निर्माण का जिम्मा आप पर ही है। आपकी इस अति महत्वपूर्ण भूमिका के निर्वहन के लिए आपका स्वयं संस्कारित होना आवश्यक है। इसीलिए संघ इस शिविर में आपके भीतर उन संस्कारों का बीजारोपण करने का प्रयत्न कर रहा है। इस शिविर में भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ व मालवा प्रांत की 80 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में बालिकाओं को आईएएस अधिकारी बलवंत सिंह कालेवा का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। सत्येंद्र सिंह पतलासी द्वारा बालिकाओं को स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक जानकारियां प्रदान की गईं। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली भी शिविर में उपस्थित रहे।

बावतरा में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित

जालौर जिले के बावतरा गांव में स्थित कैवाय माता मंदिर परिसर में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 9 से 12 मई तक आयोजित हुआ। जालौर संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि अपने पूर्वजों की गौरवशाली परंपरा को जीवित रखना हमारा कर्तव्य है। इसके लिए त्याग की आवश्यकता है। त्याग शब्दों से नहीं सिखाया जा सकता बल्कि अभ्यास से ही आचरण में आ सकता है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने शिविरों में छोटी-छोटी गतिविधियों के माध्यम से उस त्याग का अभ्यास करवा रहा है। उन्होंने कहा कि हम इस शिविर में क्षात्र धर्म पालन का जो अभ्यास कर रहे हैं उसका साक्षी यह केसरिया ध्वज है। हमारे पूर्वजों के शौर्य और बलिदान का साक्षी भी यही केसरिया ध्वज रहा है। इस ध्वज के प्रति हमारा पूज्य भाव हमें निरंतर स्वधर्म पालन की प्रेरणा देता रहेगा। शिविर में सायला, सुराणा, आंवलोज, ओटवाला, बावतरा, जालमपुरा, भुंडवा, आसाणा आदि स्थानों से 90 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अजमेर में 24वां क्षत्रिय प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

श्री क्षत्रिय प्रतिभा विकास एवं शोध संस्थान अजमेर द्वारा 24वाँ क्षत्रिय प्रतिभा सम्मान समारोह 11 मई को जेएलएन मेडिकल कॉलेज के भीमराव अंबेडकर सभागार में आयोजित हुआ। समाज में शिक्षा, चिकित्सा, सैन्य सेवा, सामाजिक सेवा सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाली राजपूत समाज की 144 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राजस्थान की उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि आपकी प्रतिभा को विकसित होने के लिए सकारात्मक वातावरण समाज ने आपको प्रदान किया है। इसलिए आपकी भी यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि आप अपने साथ दूसरों को भी आगे बढ़ाने में सहयोग करें। समाज तभी सशक्त होगा जब उसकी प्रत्येक इकाई सशक्त होगी। राजपूत समाज सर्व समाज को साथ लेकर चलने वाला समाज है। सभी की रक्षा करने का भाव हमारे संस्कारों में है। इस भाव को हमें बनाए रखना है। उन्होंने कहा कि समाज के हित में निस्वार्थ भाव से कार्य करते हुए हमें राष्ट्र सेवा के उच्चतम आदर्शों को धारण करना है। राष्ट्र निर्माण में अपना सर्वोच्च योगदान देकर हमें अपने समाज की विशिष्ट पहचान को सुदृढ़ करना है। कार्यक्रम में मसूदा विधायक वीरेंद्र सिंह कानावत, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक हेमंत प्रियदर्शी, पूर्व विधायक रणधीर सिंह भिण्डर, दलपत सिंह रुणिजा, डॉ. विक्रांत सिंह तोमर सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय प्रतिभा विकास एवं शोध संस्थान के अध्यक्ष अजय सिंह राठौड़ संस्था के अन्य पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं के साथ उपस्थित रहे। मातृशक्ति सहित स्थानीय समाजबंधु भी कार्यक्रम में शामिल हुए।

पाडला जागीर में शहीद दिनेश पाल सिंह की प्रतिमा का अनावरण

करौली जिले में टोडाभीम के पाडला जागीर गांव में शहीद दिनेश पाल सिंह की प्रतिमा का अनावरण 1 मई को समारोह पूर्वक किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सैनिक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजोर ने कहा कि देश की रक्षा के लिए शहीद होने वाले वीर हम सभी के लिए प्रेरणा पुंज है। इन वीरों के बलिदान के प्रति कृतज्ञता और सम्मान प्रकट करना हम सभी का कर्तव्य है। शहीद दिनेश पाल सिंह की यह प्रतिमा न केवल उनकी स्मृति को चिरस्थाई बनाए रखेगी बल्कि आने वाली पीढ़ी को भी देशभक्ति की प्रेरणा देगी। झुंझुनू के मूर्तिकार वीरेंद्र सिंह शेखावत द्वारा तैयार की गई काले पत्थर की आदमकद प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर श्री राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुलदीप सिंह तंवर, भाजपा जिला अध्यक्ष गोवर्धन सिंह जादौन सहित अनेकों जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य व्यक्ति क्षेत्रवासियों के साथ उपस्थित रहे और शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित की। शहीद के पिता कृपाल सिंह राजावत (सेवानिवृत्ति कैप्टन भारतीय सेना) भी अन्य परिजनों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। पाड़ला जागीर गांव के निवासी दिनेश पाल सिंह 15 मई 2022 को पटियाला में तैनाती के दौरान शहीद हो गए थे।

संपादकीय

आवश्यक है मिथ्या मनोवैज्ञानिक भय से मुक्ति

आत्यंतिक रूप से शक्तिशाली शाश्वत, सार्वभौमिक और निरपेक्ष सत्य के शोध हेतु आवश्यक साधना की क्षमता के अभाव में सामान्य जनमानस शाब्दिक व्याख्याओं अथवा प्रचार के आधार पर निर्मित धारणाओं को ही सत्य स्वीकार कर लेता है। शाश्वत, सार्वभौमिक और निरपेक्ष सत्य की साधना का अभाव उस सत्य को जड़ता के आवरण में छिपा देता है और उस सत्य की अनुपस्थिति में शाब्दिक व्याख्याओं और प्रचार के आधार पर निर्मित धारणाओं का प्रभाव इतना बढ़ जाता है कि वे धारणाएं ही जनमानस को संचालित करने वाली बन जाती हैं। इन्हीं धारणाओं को वर्तमान में 'नैरेटिव' कर संबोधित किया जाता है। भारत में भी आजादी से बहुत पूर्व ही स्वार्थ बुद्धि की उपासना करने वाले समूहों ने विभिन्न जातियों और समुदायों के मनोविज्ञान को नियंत्रित और संचालित करने वाली धारणाओं का निर्माण करना प्रारंभ कर दिया और आजादी के बाद यह क्रम और अधिक तीव्र गति से जारी है।

बहुसंख्यक लोगों के समर्थन से सत्ता प्राप्त करने प्रणाली के कारण इन समूहों ने स्वाभाविक रूप से इस देश का नेतृत्व करने वाले राजपूतों को अलग थलग करने के लिए जाति के नाम पर एक मनोवैज्ञानिक युद्ध प्रारंभ किया और हमारी जाति तब से लगातार इस युद्ध का शिकार बनती आ रही है। इस प्रक्रिया में विभिन्न समुदायों को इन समूहों ने अपने पक्ष में करने के लिए उनकी सकारात्मक पहचान को पुष्ट करने वाली धारणाएं निर्मित और प्रचारित की, वहीं राजपूत समाज की पहचान को ही शोषक, पीड़क, अधिनायकवादी, रूढ़िवादी आदि स्वरूपों में नकारात्मक बनाने का प्रयत्न किया। किसी को किसान समुदाय घोषित करके सरल, मेहनती और उपयोगी होने का नैरेटिव निर्मित किया, किसी को अल्पसंख्यक तो किसी ने दलित बताकर देश के संसाधनों और सुविधाओं पर उनके स्वाभाविक अधिकार का नैरेटिव रचा, किसी समुदाय को पर्यावरण प्रेमी की पहचान पर दावा करने को प्रेरित किया तो किसी को अपनी संख्या के बल पर समान भागीदारी का नारा देकर स्वयं के पक्ष में लामबद्ध करने का दांव चला। किसी को इस देश के ज्ञान का उद्घोषक बताकर देश में चल रही सभी राजनीतिक विचारधाराओं में स्वयं को नेतृत्व की प्रथम पंक्ति में रखने को प्रेरित किया।

इस प्रक्रिया में सभी समुदायों ने अपनी स्वतंत्र और सकारात्मक पहचान की धारणा निर्मित और प्रचारित कर उनके अपने समुदाय की जातीय भावना को मजबूत किया और उसी का परिणाम हुआ कि ऐसी सभी जातियां और उनके सदस्य अपनी जातीय पहचान को सहज रूप से स्वीकार करते हैं और सार्वजनिक मंचों पर भी अपने जातीय हितों की बात करने अथवा अपनी जातीय भावना को मजबूत करने के नैरेटिव को आगे बढ़ाने से नहीं हिचकिचाते। यद्यपि इस जातीय भाव को सतोगुणीय नहीं रख पाने की उपयुक्त साधना न होने से यह विभिन्न रूपों में राष्ट्र के लिए घातक भी बनता जा रहा है और इसे हवा देने वाले समूह इस वास्तविकता से आंख मूंदे बैठे हैं जो कि एक अलग प्रकार की चुनौती और प्रश्न है। इसी कारण जातीय भाव को बढ़ाने के लिए नकारात्मक साधनों और उदाहरणों के प्रयोग से भी इनके नेतृत्वकर्ता झिझकते नहीं है। आज तो रावण जैसे खलनायक में भी गुण ढूंढकर उसे नायक बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं। संपूर्ण भारतीय वांग्मय में उल्लेखित तथ्यों की अनदेखी कर अंशावतार भगवान परशुराम को सभी अवतारों में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया जा रहा है। मुगल साम्राज्य के अंत के समय समस्त उतरी और मध्य भारत में सामान्य जन को लूटने एवं अपनी चौथ वसूली द्वारा आम जनता का जीना मुश्किल करने वाले लोगों को भी अधिकृत रूप से नायक सिद्ध करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। अलग अलग जातियों के काल्पनिक नायक गठित कर उनकी तमोगुणीय जातीय भावना को तुष्ट करने का सुनियोजित अभियान चलाया जा रहा है। वहीं स्वार्थ बुद्धि के उपासक उपरोक्त समूहों द्वारा राजपूत जाति की पहचान को सामंती और शोषक के रूप में प्रचारित कर उनके द्वारा इस संस्कृति और राष्ट्र के लिए किए गए अद्वितीय त्याग को नकारने के आपराधिक षड़यंत्र किए जा रहे हैं। इसके विभिन्न दुष्प्रभावों में सर्वाधिक घातक प्रभाव यह रहा कि राजपूत समुदाय में आत्महीनता की एक मनोवैज्ञानिक धारणा स्थापित हो गई है जिससे वह अपनी संघर्ष, नेतृत्व, संगठन आदि की जातीय विशेषताओं और क्षमताओं का अपने हित में उपयोग नहीं कर पा रहा। उक्त मनोवैज्ञानिक धारणा के कारण ही आज भी हमारे समाज के राजनेता, लेखक, बुद्धिजीवी, पत्रकार, व्यवसायी आदि व्यक्तिगत रूप से तो समाज के प्रति अपनत्व के भाव की बात करते हैं, समाज हित में सहयोगी होने की चाह भी प्रकट करते हैं, सहयोगी भी बनते हैं लेकिन सार्वजनिक मंचों पर यह बात कहने अथवा स्वीकार करने का साहस नहीं कर पाते। वे उपरोक्त समूहों द्वारा जातिवाद के नाम पर खड़े किए गये मनोवैज्ञानिक वातावरण से इतने प्रभावित हो गये हैं कि हमारी विशेषताओं को भी सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने में हिचकिचाते हैं।

इसी का परिणाम है कि व्यक्तिगत बातचीत और व्यक्तिगत प्रयत्नों में समाज के प्रति सकारात्मक बात करने वाले श्रेष्ठ व ज्येष्ठ लोग अपने आपको सार्वजनिक जीवन में समाज के साथ खड़ा होने की बात कहने में स्वयं में एक अपराध बोध का अनुभव करने लगे हैं। अन्य जातियों के सभी राजनेताओं के व्यक्तिगत कर्मचारियों में अधिसंख्य भाग उन्हीं की जाति के लोगों का होता है लेकिन हमारी जाति के राजनेता इस बात में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं कि उनके व्यक्तिगत स्टाफ में कितने कम राजपूत हैं। हमारे अधिकारी सार्वजनिक रूप से यह सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं कि वे राजपूतों को महत्व नहीं देते हैं। अनेक ऐसे लोग मिलते हैं जो समाज के लोगों के भले के लिए लंबी लंबी योजनाएं बताते हैं लेकिन जब उनसे उन योजनाओं में उनके क्षेत्राधिकार का ही सहयोग मांगा जाता है तो वे स्वयं उक्त मनोवैज्ञानिक युद्ध के प्रभाव में हारे हुए योद्धा सिद्ध होते हैं। यहां तक कि अन्य समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे तत्व जो हमारे समाज के प्रति द्वेष की भावना रखते हैं, वे जब अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हमारे समाज के प्रति दुष्प्रचार करते हैं, हमारे महापुरुषों और मान बिंदुओं का सार्वजनिक अपमान करते हैं, हमारे इतिहास को विकृत करने का कुकृत्य करते हैं, तब भी हमारे समाज का विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व करने वाले अग्रणी व्यक्ति स्वयं को समाज के प्रतिनिधि के रूप में आगे करके उस दुष्प्रचार का उत्तर देने में हिचक अनुभव करते हैं और येन केन प्रकारेण बचने का प्रयास करते हैं। सार्वजनिक रूप से अपनी जातीय पहचान को स्वीकार करने में यह भय उसी मनोवैज्ञानिक धारणा का परिणाम है जो हमारे समाज के प्रति झूठे नैरेटिव का निर्माण करके स्थापित की गई। इस मिथ्या धारणा को हमारी सामाजिक चेतना से निष्कासित करना आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि हम समाज में जातीय भावना को प्रबल करने वाली धारणाओं को पुष्ट करें, भारतीय संस्कृति के रक्षक और पोषक के रूप में अपने समाज की सकारात्मक पहचान को सार्वजनिक रूप से प्रकट करें, हमारे समाज की श्रेष्ठताओं को उसी स्वरूप में पेश करना प्रारंभ करें जो स्वरूप आज के युग का आदर्श बन चुका है या बना दिया गया है जैसे लोकतंत्र, पंथनिरपेक्षता, युद्ध के साथ साथ अन्य क्षेत्रों में हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए अतुलनीय कार्य, हर समय और परिस्थितियों में हमारे पूर्वजों द्वारा राष्ट्रीय जीवन में आयी जड़ता को तोड़ने के लिए किए गए क्रांतिकारी प्रयास आदि, हमारे समाज के प्रति होने वाले प्रायोजित दुष्प्रचार का खुल कर खंडन करें और सार्वजनिक रूप से अपने समाज के साथ अपनी पहचान को जोड़ने में किसी हीनता का अनुभव न करें। यद्यपि आलेख के प्रारंभ में वर्णित सत्य-साधना की समाज में पुनर्स्थापना ही हमारा आत्यंतिक आदर्श होना चाहिए, क्योंकि उसी से जातीय भावना, जो स्वयं में एक महत्वपूर्ण और प्रबल शक्ति है, को सतोगुणीय बनाकर रखा जा सकता है। किंतु आदर्श की ओर बढ़ने का मार्ग वर्तमान के यथार्थ से ही निकलता है और नैरेटिव निर्माण वर्तमान का यथार्थ है जिसमें पराजित होने का अर्थ होगा अपने आदर्श तक पहुंचने का मार्ग नष्ट होने देना और जिस आदर्श तक पहुंचने का मार्ग उपलब्ध नहीं होता, वह आदर्श कितना ही श्रेष्ठ होते हुए भी अव्यावहारिक बनकर जनजीवन से लुप्त हो जाता है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ सत्य-साधना के आदर्श को व्यावहारिक बनाने के लिए वर्तमान के यथार्थ को स्वीकार कर उसी के अनुरूप प्रत्येक उपलब्ध साधन का सदुपयोग अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करने की बात करता है। आएं, हम भी अपने समाज के लिए बेड़ी बनने वाली मिथ्या मनोवैज्ञानिक धारणाओं को खंडित करें और इस अनावश्यक भय से मुक्त होवें।

राजपूत सभा अजमेर के चुनाव सम्पन्न, महेंद्र सिंह ढोंस बने अध्यक्ष

राजपूत सभा जिला अजमेर के अध्यक्ष पद के चुनाव श्री जगदम्बा छात्रावास केकडी में 11 मई को सम्पन्न हुए। चुनाव में निवर्तमान अध्यक्ष महेंद्र सिंह ढोंस को पुनः निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। चौथी बार अध्यक्ष बने ढोंस ने सभी का आभार जताया एवं निष्ठा और समर्पण से समाज हित में कार्य करने की बात कही। चुनाव पर्यवेक्षक का दायित्व गजराज सिंह कैलाई, लोकेंद्र सिंह लोटवाड़ा और जोगेंद्र सिंह सावरदा ने निभाया। इस दौरान श्री राजपुत सभा जयपुर की केंद्रीय कार्यकारिणी के उपाध्यक्ष प्रताप सिंह राणावत, महामंत्री धीर सिंह शेखावत, संगठन मंत्री अजय सिंह पचकोडिया, कोषाध्यक्ष प्रधुम्न सिंह मूंडरू, सहमंत्री पृथ्वी सिंह कालीपहाड़ी एवं पूर्व प्रधान भूपेंद्र सिंह सावर, प्रधान होनहार सिंह, क्षत्रिय सभा अध्यक्ष गोपाल सिंह राठौड़ सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालिया भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

सोजत मंडल का त्रैमासिक स्नेहमिलन

पाली प्रांत में बगड़ी नगर के निकट स्थित कालका माता मंदिर प्रांगण में सोजत मंडल का त्रैमासिक स्नेह मिलन 28 अप्रैल को आयोजित हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक हीरसिह लोडता ने आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर और जून माह में मंडल में प्रस्तावित शिविर के संबंध में चर्चा की। कार्यक्रम में लक्ष्मण सिंह रायरा, अर्जुनसिंह बीजागुडा, अजीतसिंह रुदिया, विक्रम सिंह भीटवाडा, अर्जुन सिंह देवली हुल्ला, मण्डल प्रमुख बहादुर सिंह सारंगवास, गजेन्द्र सिंह व अन्य सहयोगी उपस्थित रहे।

प्राचीन ताम्र नगर ही वर्तमान सोजत नगर

विगत वैभव एवं अतीत की राजनीतिक उठा पटक का मौन साक्षी सोजत का खंडित दुर्ग प्राचीन कालीन ताम्र नगर तांबावती नगरी के भग्नावशेषों पर स्थापित है। सुकड़ी नदी के मुहाने पर बसा यह सोजत, प्राचीन समय में शुददंती (शुद्धनंती) नामक स्थान था, जो कि ताम्र (तांबे) की खानों के कारण ताम्रवती (तांबावती, त्रांबावती) नगर के नाम से विख्यात रहा। मारवाड़ के इतिहास के अनुसार कालांतर में इस तांबावती नगरी के विखंडित हो जाने से सन् 1054 ई (विक्रम संवत 1111 में) हुल (हुला) नामक क्षत्रियों ने सेजल माता के नाम से इसे पुनः बसाया। इस कारण इसका नामकरण सेजल या सेजत हो गया, जो अपभ्रंश होकर धीरे-धीरे सोजत हो गया होगा, ऐसा अनुमान है।

सोजत पर परमार, हुला, सोनिगरा चौहान, सिंधल राठौड़, सोलंकी, मेवाड़ के सिसोदिया, मारवाड़ के राठौड़ समेत मुगलों का भी समय-समय पर अधिकार होना पाया जाता है। अतीत के गौरव इस सोजत दुर्ग का निर्माण मारवाड़ के शासक राव जोधा के पुत्र निंबा (नीमा) द्वारा सन् 1460 ईस्वी के आसपास शिरडी नामक डूंगरी पर किए जाने का उल्लेख पाया जाता है, वहीं ऐतिहासिक ख्यातो में मारवाड़ के शक्तिशाली शासक राव मालदेव द्वारा यह दुर्ग निर्माण किए जाने का वृतांत मिलता है। यह सोजती दुर्ग मारवाड़ राज्य का प्रमुख सुरक्षा प्रहरी कवच दुर्ग रहा है जो अतीत के ऐतिहासिक संघर्षों का सतत साक्षी माना जाता है। मारवाड़ नरेश मालदेव द्वारा सोजत के दुर्ग के चारों ओर सुदृढ प्राचीर का निर्माण करवाया गया था। मारवाड़ के स्वाभिमान एवं स्वतंत्रता प्रिय शासक व मारवाड़ का भूला बिसरा महानायक (फॉरगॉटन हीरो ऑफ मारवाड़) के नाम से प्रसिद्ध राव चंद्रसेन की राजधानी भी इस सोजत दुर्ग को होने का गौरव प्राप्त है। कालांतर में बादशाह अकबर द्वारा राव मालदेव के अन्य पुत्र राम को सोजत दिया गया। इसी क्रम में मोटा राजा उदय सिंह को भी सोजत जागीर में मिला था। मुगल बादशाह जहांगीर द्वारा सन् 1607 ईस्वी में राठौड़ कर्मसेन को सोजत सौंपा गया था। मारवाड़ के स्वाभिमान एवं विगत वैभव के प्रतीक सोजत ने सतत संघर्षों का सामना करने का इतिहास रचा है। सन् 1807 ईस्वी में यहां जोधपुर राज्य की टकसाल भी स्थापित की गई थी। यह दुर्ग मारवाड़ का सशक्त प्रहरी दुर्ग रहा है जहां पर धरती पुत्रों की शहादत एवं बलिदान का गौरव खंड-खंड बिखरा पड़ा है। यहां के भग्नावशेष, बुर्जे, कंगूरे आदि गौरवशाली अतीत को अपने आंचल में समेटे मातृभूमि के लाडलों के दुश्मनों से लड़ते-लड़ते कट-कट कर रक्त रंजित शहादत की याद दिलाते हुए से प्रतीत होते हैं। कालांतर में जोधपुर के शासक विजयसिंह ने सोजत में एक अन्य पहाड़ी पर नरसिंहगढ़ नाम से नया दुर्ग भी बनवाया जिसके चारों ओर गुलाबराय पासवान द्वारा परकोटा बनवाने का भी उल्लेख मिलता है। अस्तु सोजत का दुर्ग प्राचीन कालीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक कालीन इतिहास का मौन साक्षी है जिसके भग्नावशेष बलिदानों की गौरव गाथा गाते से प्रतीत होते हैं। मातृभूमि के गुमनाम शहीदों को शत शत नमन्।

- डॉ उदयसिंह डिगार,
प्रांत उपाध्यक्ष, इतिहास संकलन समिति।

भिंयाड़ में सामाजिक चिंतन बैठक आयोजित

बाड़मेर जिले के भिंयाड़ गांव में स्थित नागाणाराय मंदिर में 2 मई को स्थानीय राजपूत समाज की सामाजिक चिंतन बैठक आयोजित हुई। बैठक में शिक्षा, व्यापार और सामाजिक कुरीतियों सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई एवं समाज में फैल रही बुराइयों पर रोक लगाने के लिए निर्णय लिए गए। मृत्युभोज, विवाह आदि अवसरों पर अफीम, डोडा और शराब पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया। बैठक में सेवानिवृत्त लेखाधिकारी जयसिंह राठौड़ ने कहा कि नशे ने समाज को बहुत हानि पहुंचाई है। अब इस पर रोक लगाना आवश्यक है। राजेंद्रसिंह भिंयाड़ ने कहा कि कुरीतियों से लड़ाई की शुरूआत स्वयं से करनी होगी। युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए कठोर कदम उठाने होंगे। बैठक में रिडमलसिंह, इंद्रसिंह, देरावर सिंह, होतराज सिंह, कूपसिंह, मनोहर सिंह, सरपंच भिंयाड़ तनेराज सिंह, रघुनाथ सिंह, तेजसिंह, हीरसिंह, कानसिंह, कमल सिंह सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

जैतारण और नोखा में ईडब्ल्यूएस प्रमाण पत्र जागरूकता शिविर का आयोजन

30 अप्रैल को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा जैतारण तहसील के डूंगरनगर गांव में ईडब्ल्यूएस प्रमाण पत्र जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें योग्य अभ्यर्थियों के मूल निवास तथा ईडब्ल्यूएस प्रमाण पत्र के आवेदन करवाए गए। इस दौरान फाउंडेशन के सदस्य अजीत सिंह रूदिया सहित भगवान सिंह, भवानी सिंह, हिम्मत सिंह, शक्ति सिंह, भूपेंद्र सिंह, महावीर सिंह आदि सहयोगी उपस्थित रहे। 30 अप्रैल को ही नोखा (बीकानेर) में स्थित श्री करणी राजपूत छात्रावास में शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें योग्य अभ्यर्थियों के ईडब्ल्यूएस प्रमाण पत्रों के आवेदन करवाए गए। कार्यक्रम में सहयोगी के रूप में मगेज सिंह जांगलू, तेज सिंह भादला, मिठ्ठू सिंह बू, जितेन्द्र सिंह चरकड़ा, मान सिंह चरकड़ा, महेन्द्र सिंह शोभाना, किशन सिंह गुसांईसर, सुरेन्द्र सिंह कंवलीसर आदि उपस्थित रहे।

अजय कुमार सिंह बने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार परिषद के सदस्य

लेफ्टिनेंट जनरल अजय कुमार सिंह (सेवानिवृत्त) राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार परिषद (एनएसएबी) के सदस्य नियुक्त किए गए हैं। पहलगाम में आतंकी हमले के पश्चात भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार परिषद का पुनर्गठन किया गया जिसमें पूर्व रॉ प्रमुख आलोक जोशी को परिषद का चेयरमैन नियुक्त किया गया एवं छह सदस्यों की भी नियुक्ति हुई जिनमें उत्तराखंड के हरिद्वार जिले के नारसन ब्लॉक के ठसका ग्राम के मूल निवासी अजय कुमार सिंह शामिल हैं। पीवीएसएम, एवीएसएम, एसएम, वीएसएम से सम्मानित सिंह दक्षिणी कमान के पूर्व जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के पूर्व लेफ्टिनेंट गवर्नर भी रह चुके हैं। उन्होंने भारतीय सेना में 1984 में 7/11 गोरखा राइफल्स में कमीशन के साथ अपनी सेवा प्रारंभ की थी।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

BNB
ॐ
श्री योगेश्वर छात्रावास
कुचामन सिटी
विशेषताएं
1. कक्षा 6 से 12 वीं तक के विद्यार्थियों हेतु सीमित स्थान ।
2. अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या ।
3. शुद्ध, पौष्टिक एवं सात्विक आहार ।
4. सभी प्रमुख शिक्षण संस्थाओ के समीप स्थित ।
5. स्वाध्याय हेतु निःशुल्क लाईब्रेरी सुविधा ।
जिम्मेदारी हमारी विश्वास आपका
संम्पर्क सूत्र :
9772097087, 9799995005, 8769190974
SBI बैंक के पास, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

पलवल में बनेगा महारानी पद्मावती महिला महाविद्यालय

हरियाणा के पलवल में महारानी पद्मावती महिला महाविद्यालय का निर्माण 4 एकड़ भूमि में किया जाएगा जिसकी भवन निर्माण योजना एवं प्रतीक चिह्न का लोकार्पण 3 मई को न्यू सोहना रोड स्थित महाराणा प्रताप भवन में समारोह पूर्वक किया गया। समारोह के संयोजक एवं महाराणा प्रताप भवन समिति के अध्यक्ष हरेंद्रपाल राणा ने बताया कि लोकार्पण हरियाणा सरकार में शहरी स्थानीय निकाय, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री विपुल गोयल द्वारा किया गया। इस अवसर पर खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री राजेश नागर एवं खेल मंत्री गौरव गौतम भी उपस्थित रहे। वक्ताओं ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि वीरांगना महारानी पद्मावती इस देश की बेटियों के लिए प्रेरणा स्रोत है। महाविद्यालय का नाम ऐसे प्रेरणादायी व्यक्तित्व के नाम पर रखने से यहां पढ़ने वाली बालिकाओं को आत्म सम्मान, त्याग और बलिदान की प्रेरणा मिलेगी। महाविद्यालय का निर्माण महाराणा प्रताप भवन एवं श्री सीताराम समिति पलवल द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न भामाशाहों द्वारा सहयोग राशि की घोषणा भी की गई एवं महाविद्यालय के निर्माण हेतु सवा करोड रुपए एकत्रित किए गए। इस अवसर पर असंध विधायक योगेंद्र राणा, पूर्व मंत्री संजय सिंह, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष नीरा तोमर, राजपूत प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष नरेश चौहान, गुरुग्राम राजपूत सभा अध्यक्ष अरुण चौहान, करनाल राजपूत सभा के एमपी सिंह एवं राजकुल सांस्कृतिक संस्थान फरीदाबाद के अध्यक्ष नारायण सिंह शेखावत सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

(पृष्ठ दो का शेष)

केवल युद्ध...

उत्तर प्रदेश के बिजनौर क्षेत्र के हल्दौर कस्बे में रेलवे फाटक के निकट स्थित महाराणा प्रताप प्रतिमा स्थल पर महाराणा प्रताप क्षत्रिय राजपूत सभा के तत्वावधान में जयंती मनाई गई। सभा के अध्यक्ष टीकम सिंह ने सभी से महाराणा प्रताप के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। मेरठ शहर में प्रताप जयंती के उपलक्ष्य में शौर्य यात्रा का आयोजन किया गया। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से प्रारंभ हुई शौर्य यात्रा जेलचुंगी चौराहा, साकेत, अंबेडकर चौक होते हुए महाराणा प्रताप पार्क में पहुंची जहां उपस्थित लोगों ने महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। भाजपा नेता शिवकुमार राणा, छात्र नेता गगन सोम, सुखविंद्र सोम आदि ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। छत्तीसगढ़ के भानुप्रतापपुर में भी महाराणा प्रताप की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। स्थानीय कांग्रेस विधायक सावित्री मंडावी ने प्रताप को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उन्हें भारतीय इतिहास का महान नायक बताया और सर्वसमाज को उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। वीरेंद्र सिंह ठाकुर ने महाराणा प्रताप के शौर्य, युद्ध कौशल एवं शासन व्यवस्था पर विस्तार से प्रकाश डाला। जयंती के उपलक्ष्य में नगर में शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया। हरियाणा के भिवानी क्षेत्र के बापोड़ा गांव में स्थानीय राजपूत सभा द्वारा 10 मई को महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। सभा के अध्यक्ष प्रेम राघव एवं गांव के सरपंच सुग्रीव सिंह सहित अन्य वक्ताओं ने महाराणा प्रताप का जीवन परिचय देते हुए भारतीय इतिहास में उनकी महत्ती भूमिका पर प्रकाश डाला। मंच संचालन डॉ. सतपाल सिंह तंवर व तेजवीर सिंह ने किया। दिल्ली पुलिस अकादमी वजीराबाद एवं झारोदा कलां परिसर में दिल्ली पुलिस में प्रशिक्षु समाज बंधुओं द्वारा वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रताप के त्याग और वीरता को स्मरण किया गया। मनोज सिंह, अखंड प्रताप सिंह एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक जितेंद्र सिंह आऊ ने उपस्थित साथियों को महाराणा प्रताप के जीवन चरित्र के बारे में बताया और अपने पूर्वजों के बताए मार्ग पर चलने की बात कही। 9 मई को श्री क्षत्रिय युवक संघ के पुणे प्रांत में श्री रावल मल्लीनाथ शाखा, पिंपरी चिंचवड़ (निगड़ी) द्वारा महाराणा प्रताप जयंती मनाई गई। उत्तर गुजरात संभाग के पाटन प्रांत के मोटीचन्दुर गांव में भी महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। पाटन राजपूत छात्रावास में भी शाखा स्तर पर जयंती मनाई गई।

राजस्थान के अजमेर जिले के किशनगढ़ के बांदरसिंदरी में स्थित राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय में 9 मई को प्रताप जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कुलपति प्रो. आनंद भालेराव ने महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की एवं कहा कि प्रताप के जीवन मूल्य आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। राष्ट्र भक्ति, आत्म गौरव, त्याग और संघर्ष का जैसा उदाहरण महाराणा प्रताप ने प्रस्तुत किया वैसा इतिहास में अन्यत्र नहीं मिलता। ऐसे महापुरुषों की जयंती मनाना केवल औपचारिकता नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक साधना है जिसके द्वारा युवाओं में आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा जागृत की जा सकती है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में सिरोही जिले के उन्द्रा गांव में 9 मई को महाराणा प्रताप जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में महाराणा प्रताप की जीवनी और फाउंडेशन की कार्ययोजना पर चर्चा हुई। इस दौरान फाउंडेशन के जिला सहयोगी महिपाल सिंह उन्द्रा सहित प्रताप सिंह सादलवा, चन्द्रवीर सिंह नांदिया, भगवत सिंह विरोली, लख सिंह देवकी, राजेन्द्र सिंह पिंडवाड़ा (रेलवे) आदि समाजबंधु उपस्थित रहे। 9 मई को महाराणा प्रताप जयंती के उपलक्ष्य में डीडवाना शहर में विशाल वाहन रैली का आयोजन हुआ। भरत सिंह कुड़ली के नेतृत्व में सर्वसमाज ने इस वाहन रैली में भागीदारी निभाई। रैली डीडवाना के प्रवेश द्वार से प्रारंभ हुई जिसको भाजपा नेता जितेन्द्र सिंह जोधा, श्याम प्रताप सिंह, बजरंग सिंह व अन्य गणमान्य समाजबंधुओं द्वारा रवाना किया गया। डीडवाना के विभिन्न चौराहों से रैली गुजरी जिसका स्थान-स्थान पर नगरवासियों ने पुष्प वर्षा से स्वागत किया। रैली का समापन राष्ट्रनायक वीरवर दुगार्दास राठौड़ सभा भवन में हुआ जहां पर महाराणा प्रताप की तस्वीर पर सभी उपस्थित जनों ने पुष्पांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के आयोजन में जीवराज सिंह देवराठी, भंवर सिंह सेवा, लोकेंद्र सिंह, सुरेन्द्र सिंह, अजीत सिंह, शिवराज सिंह आदि ने सहयोग किया। 11 मई को चूरू प्रान्त के रतनगढ़ मण्डल के गांव बण्डवा में श्री क्षत्रिय युवक संघ की दैनिक शाखा में प्रताप की जयंती मनाई गई। शाखा के सभी स्वयंसेवकों ने महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करते हुए उनके संघर्ष, त्याग और वीरता को स्मरण किया व उनके बताये गए मार्ग पर चलकर क्षात्र धर्म का सच्चे अर्थों में पालन करने का संकल्प लिया। ब्यावर में श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना एवं राष्ट्रीय गौ रक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ द्वारा संयुक्त रूप से मेवाड़ी गेट पर स्थित महाराणा प्रताप स्मारक पर जयंती कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां स्थित प्रताप की प्रतिमा का दुग्ध अभिषेक किया गया। अमित तोमर एवं पंकज वर्मा ने प्रताप के संघर्ष और वीरता के बारे में बताया। ब्यावर यूथ संगठन द्वारा भी प्रताप जयंती मनाई गई। संगठन के सदस्यों द्वारा अग्निशमन दल के सहयोग से महाराणा प्रताप स्मारक की साफ सफाई की गई। पृथ्वी सिंह भोजपुरा, बृजेश साहू सहित संगठन के विभिन्न पदाधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। पाटन क्षेत्र के डाबला में भी प्रताप जयंती मनाई गई।

यह समय उनका है, अधीर मत होना

जब समय तुम्हारा था,
तब तुम बोले नहीं।
तुमने तो केवल अपने धर्म का पालन किया।
त्याग, तपश्चर्या और भुजबल से,
आदर्श गढ़े तुमने।
महल छोड़े, वन-वन भटके।
पत्नी और पुत्रों का मोह छोड़ा,
बुढ़े बाप का सहारा भी न बना,
न मां की कोख को आबाद रखा।
युद्ध को खेल और मृत्यु को खिलौना समझा।
सब कुछ किया पर तुम बोले नहीं,
जब समय तुम्हारा था।

लेकिन अब समय उनका है।
वे बोलेंगे। सिर्फ बोलेंगे ही नहीं,
हर गली चौराहों पर चिल्लाएंगे।
जनता के दरबार में, तुम्हारे अवदान की
धज्जियाँ उड़ाएंगे।
वे तुम्हारे पूर्वजों को चहुंओर से नकारेंगे।
निर्लज्ज और निर्दयी, साबित करवाएंगे।
वे तुम्हारे गढ़े आदर्शों को,
भरी सभा में अपमानित करेंगे।
वे तुम्हारी पीढ़ियों के बलिदान को,
वर्तमान की तराजू में तोलेंगे।
वे तुम्हारे संघर्ष और बलिदान को,
सत्ता की भूख कहेंगे।
वे तुम्हारे सिद्धांतों और नैतिक मूल्यों को,
वैचारिक मूर्खता घोषित कर देंगे।

पर तुम अधीर मत हो जाना,
यह समय उनका है।
सारा अपमान जो शूल की तरह चुभता है तुझे,
चुपचाप चट्टान की तरह सह जाना।
वे सब कृतघ्न हो जाएं, पर तुम कृतज्ञ बने रहना।
जो अतीत में गढ़े तुमने आदर्श, उन पर डटे रहना।
वे हजार गालियाँ दें, तुम संस्कार की डोर थामे रखना।
वे लाख प्रश्न खड़े करें महापुरुषों पर,
तुम जीवंत उदाहरण खड़े करना।
वे सत्ता के मद में भले सब भूल जाएं,
तुम विशाल हृदय पिता की भांति,
सबको गले लगा लेना।
वे सब कृतघ्न हो जाएं, पर तुम दयाहीन मत हो जाना।
वे लाख गालियाँ दें तुमको, पर तुम उनके लिए जीते जाना।
उनके लिए लड़ते जाना, उनके लिए मरते जाना।
यह रीत सदियों से चलती आई, सदियों तक इस पर चलते जाना।
क्षात्र धर्म के आदर्शों पर नित चलते जाना, नित बढ़ते जाना।।

-श्रीपाल सिंह मादड़ी

वंशिका ने शूटिंग में जीता रजत पदक

डूंगरपुर जिले के मांडवा गांव की मूल निवासी वंशिका राजे सिसोदिया ने केंद्रीय विद्यालय संगठन जयपुर संभाग की 54वीं संभागीय खेलकूद प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए शूटिंग स्पर्धा में रजत पदक जीता है। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय संख्या - 1, प्रताप नगर की छात्रा वंशिका ने अंडर - 14 राइफल शूटिंग के 10 मीटर इवेंट में हिस्सा लेकर यह पदक जीता। वंशिका के पिता लक्ष्मण सिंह सिसोदिया वर्तमान में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो उदयपुर में कार्यरत हैं।

विरासतनामा: रण और राम-युद्ध और योद्धाओं के गीत

भारत में युद्धकाव्य की एक समृद्ध और प्राचीन परम्परा रही है। युद्ध और वीरता के भावों को व्यक्त करने के लिए कवियों ने विभिन्न कालों में अपनी लेखनी का उपयोग किया है। वैदिक साहित्य में युद्धों और योद्धाओं के पराक्रम का वर्णन मिलता है। इंद्र जैसे देवताओं को योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है और उनकी विजय गाथाएँ गाई गई हैं। रामायण और महाभारत भी भारतीय युद्धकाव्य परम्परा के दो महानतम उदाहरण हैं जिनमें विस्तृत युद्ध वर्णन, योद्धाओं के शौर्य, त्याग और नैतिक मूल्यों का चित्रण किया गया है। भगवत गीता, जो महाभारत का ही एक भाग है, युद्ध के दार्शनिक और नैतिक पहलुओं पर प्रकाश डालती है। मध्यकालीन परिपेक्ष में देखें तो योद्धा संस्कृति की जब भी बात होती है तो राजपूत योद्धाओं का ज़िक्र आना लाजमी हो जाता है, क्योंकि राजपूत लड़ाकाओं का दुनिया भर के योद्धाओं जैसे इंग्लैंड के नाइट, जापान के सामुराई, नार्वेजियन परम्परा के वाइकिंग, यूनानी स्पार्टन, नेपाली गुरखे, सीथियन और अफगानी पश्तूनों की तरह युद्धरत रहने का इतिहास रहा है। यह कई जातियों, सामाजिक समूहों और स्थानीय समुदायों से मिलकर बने हैं। चौथी सदी के बाद, राजपूत राजाओं ने मध्य और उत्तरी भारत के इतिहास में बड़ी भूमिका निभाई। उनका अधिक असर राजस्थान और उससे जुड़े इलाकों में रहा और इसके साथ ही यह समूह भारत के अलग-अलग हिस्सों और आज के पाकिस्तान तक फैला हुआ था।

योद्धाओं के अफसानानिगार

इतिहास को दर्ज करने के भी कई तरीके होते हैं। जब राजपूत योद्धाओं के इतिहास को टटोला जाता है तब हमें चारण काव्य के माध्यम से इस लड़ाका कौम के इतिहास और उससे जुड़ी भावनात्मकता का भान होता है। लय, संगीत और काव्य की इस अद्भुत जुगलबंदी ने राजपूत इतिहास को एक अलग आयाम दिया है। युद्ध में बजती रणभेरियों को यादगार काव्य में बदल अमर करने वाले चारणों की पारम्परिक इतिहास लेखन में विशिष्ट जगह रही है।

'पूत कटियो बख्तर पर, ब्याहण दूध सिवाय।
छींणी मलमल ओढीयां, बहु बलेबा जाय।।'

राजस्थानी युद्ध काव्य में आने वाले ऐसे छंदों के माध्यम से राजपूत योद्धाओं के बलिदान का बखान मिलता है। इस काव्य के माध्यम से कवि बताता है कि एक योद्धा की मां कह रही है कि - मेरे पुत्र ने युद्ध में बख्तर पहनकर युद्ध किया व वीरगति को प्राप्त हो गया किंतु मेरी समधन का दूध यानी मेरी पुत्र वधु का साहस व वीरत्व तो उससे भी महान है क्योंकि वह तो झीणी मलमल का वेश पहनकर बिना किसी कवच के बलिदान देने (जौहर) जा रही है।

योद्धा राजपूत वंशों के लिए चारणों द्वारा कविताएँ लिखने की परंपरा की जड़ें भारत के राजस्थान की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में बसी हैं। राजपूत योद्धा संस्कृति में बहादुरी, आत्मसम्मान और बलिदान को बहुत महत्व दिया जाता था। राजपूत युद्ध संस्कृति में चारणों ने बतौर इतिहासकार, कहानीकार और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षक के रूप में एक महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका निभाई। राजपूत योद्धाओं को समर्पित चारण काव्य उनके इतिहास को संरक्षित करने, उनके वीरों के नायकत्व का जश्न मनाने और उनकी सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करने का एक तरीका था। इनके लेखन का विस्तार और कशिश ऐसी रही है कि इतिहासकार, साहित्यकार, शोधार्थी और मानवविज्ञानी भी राजपूत योद्धाओं के इतिहास को चारण काव्य के लेंस से देखते-परखते आए हैं। राजस्थान में चारण परंपरा को तीन प्रमुख सामाजिक समूहों द्वारा आगे बढ़ाया गया: भाट, चारण और मांगणियार। जहाँ भाट समुदाय, राजपूत योद्धाओं की वंशावली के रूप में पारिवारिक इतिहास का रिकॉर्ड रखते थे और ऐतिहासिक कथाओं के मौखिक भंडार के रूप में भी काम करते थे। इसी तरह, चारण अपनी काव्य कौशल के लिए जाने जाते थे और मार्मिक युद्ध कविताएँ, दोहे, छंद लिखा करते थे। अंत में, मांगणियार या लँगा वंशानुगत संगीतकार थे जिन्होंने राजपूतों के इतिहास, संस्कृति और परंपराओं को अपने संगीत के माध्यम से मौखिक कथाओं, गीतों और वंशावलियों के साथ जोड़कर संरक्षित और प्रचारित किया।

राजपूत जजमानों और इन पारम्परिक अफसानानिगारों के बीच का संबंध पारस्परिक निर्भरता का हुआ करता था। चारणों, भाटों और मांगणियारों ने राजपूत विरासत का दस्तावेजीकरण, संरक्षण और महिमामंडन किया, जबकि राजपूत शासकों ने अक्सर इन्हें संरक्षण दिया, वित्तीय सहायता और सामाजिक मान्यता प्रदान की। आज भी राजपूत समुदाय के लोग अपने मांगणियारों को ब्याह, शादी या मरकत में बढ़-चढ़ कर अनुदान देते हैं और सांप्रदायिकता या जातीय भेदभाव से अलग रहते हुए इनसे सामाजिक आपसदारी का रिश्ता कायम रखे हुए हैं।

युद्ध, योद्धा और उनसे जुड़ा काव्य

'पूत सिखावै गोद में, बालक सुत नै बात।
रण मरियां मां अंजसै, रण भाग्यां लज जात।।'

कवि ने लिखा है कि योद्धा की मां गोद में खेलते बच्चे को कहती है कि युद्ध में मरने से तेरी मां को गर्व महसूस होगा और लड़ाई से भाग जाने पर तेरी मां को लज्जा महसूस होगी।

भाट, चारण और मांगणियारों का काव्य, मौखिक इतिहास के रूप में मकबूल रहा है, जिसमें राजपूत योद्धाओं के शौर्य और युद्ध के मैदान पर उनके पराक्रम का वर्णन होता था। कुछ विषयों में इन योद्धाओं और उनके परिवारों की प्रेम और विरह की भावनाओं का भी चित्रण मिलता है। इन कवियों के वृत्तांतों में वीर शहीदों और उनके बलिदान को समर्पित स्मृति गीत भी शामिल हैं। इन कविताओं में अक्सर नाटकीय स्थितियों और वफादारी, दोस्ती, प्रेम, वीरता, क्रोध आदि जैसी वेगपूर्ण भावनाओं को दर्शाया जाता था। जहां 'गीत', प्रेम, आनंद और दुख की भावनाओं को व्यक्त करने वाली रचनाएँ थे; वहीं 'दोहे' गहन दार्शनिक अंतर्दृष्टि और जीवन का सबक देते थे। उसी तरह 'छंद' एक विशेष लयबद्ध शैली में रचित काव्य था जो अक्सर धार्मिक समारोहों के दौरान पढ़े जाते थे। 'मुक्तक' छोटे, स्वतंत्र छंद थे जो अकेले भी पढ़े जा सकते थे या एक बड़ी रचना का हिस्सा भी हो सकते थे। वहीं 'मांड', राजस्थानी लोक संगीत की एक शैली थी जो शास्त्रीय धुनों के साथ कविता को जोड़ती थी।

इसी तरह 'पाबूजी की फड़' राजस्थान की एक पारंपरिक लोक कला है, जिसमें कपड़े की एक लम्बी स्क्रॉल (फड़) पर पाबूजी राठौड़ के जीवन और वीरता की गाथा चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। पाबूजी की फड़ का गायन 'भोपा' नामक पुजारी-गायक करते हैं। वे रावणहत्था नामक वाद्य यंत्र का उपयोग करते हैं और रात भर इस गाथा को गाते हैं। फड़ में पाबूजी के जन्म, विवाह, देवल चारणी की गायों की रक्षा के लिए युद्ध और उनके वीरगति को प्राप्त होने तक की सभी मुख्य घटनाओं को दर्शाया जाता है। एक प्रसिद्ध काव्य है 'पृथ्वीराज रासो', जिसके रचयिता चंदबरदाई माने जाते हैं। यह विशाल काव्य पृथ्वीराज चौहान के जीवन, उनके प्रेम, और विशेष रूप से उनके युद्धों पर आधारित है। 'पृथ्वीराज रासो' का यह अंश पृथ्वीराज की असीम शक्ति, निर्भीकता और युद्ध में उनके प्रचंड रूप को दर्शाता है।

'दल पुंज प्रचंड, रव रव करंत, गजराज झल्लंत, भुजदंड भरंत।
चहुँ ओर फिरंत, न डरत कहुँ, पृथ्वीराज वीर, गरजंत बहुँ।'

यह युद्ध काव्य, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक ऐसा रूप था, जो राजपूत योद्धाओं के मूल्यों, विश्वासों और भावनाओं को दर्शाता था। इन कविताओं और गाथागीतों ने राजपूत योद्धाओं के शौर्य और बलिदानों को याद किया, कबीले के गौरव और पहचान को मजबूत किया, राजपूतों की भावी पीढ़ियों को अपने पूर्वजों की तरह साहस और वफादारी के आदर्शों को बनाए रखने के लिए प्रेरित भी किया। साथ ही राजपूतों के लड़े युद्ध और उनकी संस्कृति का दस्तावेजीकरण कर भाट, चारण और मांगणियारों ने इतिहास के संरक्षण की बुनियाद भी डाली।

साहित्यविदों और इतिहासकारों के सौतेलेपन का शिकार युद्धकाव्य

'हल्द्घाट रण दितिथिया, इक साथे त्रेया भान!
रण उदय रवि अस्तगा, मध्य तप्त मकवान!!'

उक्त अंश श्याम नारायण पाण्डेय की 'हल्दीघाटी' नाम की आधुनिक वीर रस की कविता से है, जो चारण काव्य परंपरा की भावना और ओज को ही आगे बढ़ाती है।

साहित्य और इतिहास जगत से जुड़ा एक दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह भी है इन दोनों ही इदारों में चारण रचित छंदों और राजपूत योद्धाओं के मौखिक इतिहास को रद्द करने की प्रवृत्ति रही है। ऐसी रचनाओं को 'मनगढ़ंत वृत्तांत' और 'प्रायोजित शाही स्वप्रचार' कहकर कमतर आंकने की जड़ें दरअसल हिंदी साहित्य को भक्तिकाल और रीतिकाल के दो कालखण्डों (शाखाओं) में विभाजित करने में निहित हैं; जिससे 'भक्ति' का श्रेय 'लोक' को दिया जाने लगा मगर 'रीतिकाल' को 'सामंती व्यवस्था' से जोड़ा गया।

सामंती व्यवस्था से जुड़ने के बाद रीतिकाल का साहित्य 'निम्न स्तर' का माना जाने लगा। रामविलास शर्मा ने रीति काव्य को सामंती या 'दरबारी काव्य' तक कह दिया, जिससे राजपूताना के शासकों के मौखिक रूप से संरक्षित शाही खातों को सम्मानजनक मान्यता नहीं मिल पाई। इसी के चलते प्रगतिशील, वामपंथी और उदारवादी विचारकों में मौखिक इतिहास और चारण रचित छंदों की परंपरा के प्रति तिरस्कार का भाव पनपा और राजपूत युद्ध काव्य और लोककथाओं की ऐतिहासिकता के अकादमिक खंडन का आधार तैयार हुआ। इसीलिए, आधुनिक इतिहासकार और साहित्यविद राजपूत युद्धकाव्य में वर्णित लड़ाकों की वीरता और उनके बलिदान के काव्यात्मक संदर्भों को आज भी संदेह की दृष्टि से देखते हैं और उनकी प्रामाणिकता पर बार बार सवाल उठाते हैं। इस प्रवृत्ति को और गहराई से समझने के लिए हम देखते हैं कि कैसे रीतिकाल में देशज भाटों, चारणों, हरबोलों द्वारा लिखे गए राजपूत शासकों के शाही वृत्तांत, मौखिक रूप से संरक्षित लोककथाओं और गीतों को कुछ आधुनिकतावादियों द्वारा खारिज किया जाता है और 'शाही आत्मप्रशंसा' या 'अतिश्योक्ति' कहकर मिथक बता दिया जाता है। चारणों द्वारा रचित युद्धकाव्य में प्रयुक्त अतिशयोक्ति के तत्व को राजपूत योद्धाओं को प्रेरित करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण के रूप में देखा जा सकता है। शासक राजाओं के चरित्र की स्पष्ट रूप से प्रशंसा की जाती थी और उन्हें उद्धारक और देवताओं के बराबर बताया जाता था, इसलिए लोककथाओं के बोल पौराणिक छवि को आदर्श बनाने के लिए उपयोग किए जाते थे, जो कार्लाइल के शब्दों में, लगभग 'नायक-पूजा' करने जैसा था। साहित्यिक अलंकरण के बावजूद, चारणों , भाटों और मांगणियारों द्वारा रचित और गाए जाने वाले ये प्रशस्ति गीत और वृत्तांत, राजपूत योद्धाओं के प्रति कवियों की गहरी ऋणग्रस्तता, चेतना और समर्पण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्होंने अपने देशवासियों, क्षेत्र और अपनी मातृभूमि के सम्मान के लिए अपना जीवन तक दांव पर लगा दिया था। इसीलिए भारतीय उपमहाद्वीप के धरोहर के तौर पर इस युद्ध-काव्य को ऐतिहासिक मान्यता और सामाजिक ख्याति मिलना बेहद जरूरी है।

ऐश्वर्या ठाकुर ('बोले भारत' वेबसाइट से साभार)

हर्ष शेखावत को दक्षिण कोरिया के विवि से छात्रवृत्ति

अलवर जिले के नारायणपुर तहसील के गढ़ी मामोड गांव के निवासी हर्ष सिंह शेखावत को दक्षिण कोरिया की प्रतिष्ठित अजाउ यूनिवर्सिटी से कंप्यूटर विज्ञान और सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग की पढ़ाई हेतु 11.90 लाख दक्षिण कोरियाई वॉन (70.64 लाख रुपए) की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई है। इस छात्रवृत्ति हेतु भारत से कुल 16 छात्रों का चयन हुआ है जिनमें हर्ष राजस्थान से इकलौते छात्र हैं। हर्ष के पिता केसरपाल सिंह किसान है एवं माता सीमा कंवर गृहिणी है। प्रारंभ से ही मेधावी विद्यार्थी रहे हर्ष ने दसवीं कक्षा में 96% और 12वीं कक्षा में 90% अंक प्राप्त किए थे।

सेंथी में विशेष शाखा व सामूहिक यज्ञ का आयोजन

चित्तौड़गढ़ प्रांत में श्री क्षत्रिय युवक संघ की विशेष शाखा व सामूहिक यज्ञ का आयोजन 11 मई को श्री क्षत्रिय सेवा संस्थान सेंथी, चितौड़गढ़ में किया गया। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर एवं मातृशक्ति माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर की जानकारी दी। संघ शक्ति,पथ प्रेरक की सदस्यता की समीक्षा की गई। इस अवसर पर अजयपाल सिंह चरपोटिया, लाल सिंह सोनियाणा, अनिरुद्ध सिंह बानीणा, नरेन्द्र सिंह नरधारी, आकोलागढ़ से सूर्यकरण सिंह, लोकमहेश्वर सिंह, ललित सिंह सिरड़ी आदि उपस्थित रहे।

हरपालसिंह हाडाटोडा को पितृ शोक

सुधीर सिंह बापालाल

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हरपालसिंह हाडाटोडा (गुजरात) के पिता **श्री सुधीर सिंह बापालाल** जाडेजा का देहावसान 27 अप्रैल 2025 को 58 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

'अप्प दीपो भव' के संदेश को स्मरण कर मनाई बुद्ध पूर्णिमा

जयपुर

गोहिलवाड़

पुंदलसर

12 मई को बुद्ध पूर्णिमा, जिसे तथागत बुद्ध के जन्म, बुद्धत्व प्राप्ति और निर्वाण का दिवस माना जाता है, के उपलक्ष्य में संघ के स्वयंसेवकों द्वारा विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित करके भारत की तत्कालीन धार्मिक व्यवस्था में जड़ता के कारण आई विकृतियों को दूर करने के लिए नवीन साधना मार्ग प्रदान करने वाले क्षत्रिय कुमार गौतम बुद्ध के 'अप्प दीपो भव' के संदेश को स्मरण किया गया एवं उनके प्रति श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट की गई। जयपुर स्थित संघ के केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में प्रातःकालीन शाखा में बुद्ध पूर्णिमा मनाई गई जिसमें माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। दक्षिण गुजरात सम्भाग में सूरत में लगने वाली सभी नियमित शाखाओं में बुद्ध पूर्णिमा मनाई गई। पृथ्वीराज शाखा में बाबूसिंह रेवाड़ा, मल्लिनाथ शाखा में जालमसिंह चांदेसरा, राव चंद्रसेन शाखा में सूरत ग्रामीण प्रान्त प्रमुख भवानीसिंह माडपुरिया, बादलनाथ शाखा में सम्भाग प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा, वीर दुगार्दास शाखा में सूरत शहर प्रान्त प्रमुख दिलीप सिंह गड्डा, तनेराज शाखा में बाबूसिंह सोनू और वीर बल्लू जी शाखा में महेंद्र सिंह गुनाठु ने भगवान बुद्ध के जन्म से लेकर निर्वाण तक के जीवन पर प्रकाश डाला और बुद्ध पूर्णिमा के महत्व से सभी को अवगत कराया। गुजरात के गोहिलवाड संभाग में तक्षशिला शाखा में बुद्ध पूर्णिमा के कार्यक्रम के अंतर्गत बुद्ध के संदेश और उनके जीवन चरित्र पर चर्चा की गई। अजमेर प्रांत की वीर दुगार्दास शाखा द्वारा श्री जगदम्बा छात्रावास केकड़ी में बुद्ध पूर्णिमा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। देशराज सिंह लिसाड़िया द्वारा महात्मा बुद्ध के जीवन परिचय व बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के बारे में अवगत करवाया गया। भंवर सिंह देवगांव व जसवंत सिंह डोराई ने भी अपने विचार रखे। बीकानेर संभाग में पुन्दलसर शाखा में कार्यक्रम रखा गया जिसमें बुद्ध के सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध बनने तक के जीवन वृत्त के बारे में विस्तार से बताया गया और उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा लेने की बात कही गई। चित्तौड़गढ़ में भीलवाड़ा रोड स्थित श्री भूपाल राजपूत छात्रालय में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। दक्षिण मुंबई प्रांत की तनेराज शाखा में भी बुद्ध पूर्णिमा का कार्यक्रम रखा गया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा इस अवसर पर वर्चुअल कार्यक्रम कर जयंती मनाई गई।

सिंगोली में चौदहवां क्षत्रिय सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित

भीलवाड़ा जिले के सिंगोली चारभुजा स्थित हरिहर धाम में अक्षय तृतीया (30 अप्रैल) को क्षत्रिय महासभा भीलवाड़ा, मेवाड़ सामाजिक सेवा संस्थान सिंगोली एवं सामूहिक विवाह सम्मेलन समिति सिंगोली चारभुजा के संयुक्त तत्वावधान में चौदहवां क्षत्रिय सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें 50 युगल वैवाहिक बंधन में बंधे। प्रतिवर्ष होने वाले इस सम्मेलन के माध्यम से अब तक कुल 1139 युगलों का विवाह संपन्न हो चुका है। मांडलगढ़ के पूर्व विधायक और सम्मेलन के संरक्षक प्रदीप कुमार सिंह ने नवदंपतियों और उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि विवाह जैसे सामाजिक संस्कार को सरल और सुलभ बनाना समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है। सामूहिक विवाह आयोजन न केवल अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाता है, बल्कि इससे समाज में समानता और बंधुत्व की भावना भी पनपती है। मुख्य अतिथि शत्रुजीत सिंह शाहपुरा ने विवाह समिति की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज में सकारात्मक बदलाव आता है। उन्होंने युवाओं को शिक्षा एवं करियर निर्माण के लिए प्रेरित करने की भी आवश्यकता जताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वायुसेना के सेवानिवृत्त ग्रुप कैप्टन और राजस्थान खेल परिषद के पूर्व अध्यक्ष गजेंद्र सिंह बानसी ने कहा कि वर्ष 2010 से सिंगोली में प्रारंभ हुआ यह आयोजन समाज की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण है। जौहर स्मृति सेवा संस्थान महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा निर्मला कंवर और सर्वोत्तम सेवा संस्थान भारत के महेन्द्र सिंह जाखली ने बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने और सामाजिक कुरीतियों व नशे जैसी प्रवृत्तियों से बचने का आह्वान किया। समिति के संयोजक कुलदीप सिंह श्यामपुरा ने युवाओं से सामाजिक कार्यों के साथ शिक्षा और करियर पर भी फोकस करने की अपील की। समिति की ओर से वर-वधुओं को विभिन्न प्रकार के उपहार भी भेंट स्वरूप प्रदान किए गए। समारोह में आसींद के पूर्व प्रधान चंद्रवीर सिंह जगपुरा, राजपूत छात्रावास केकड़ी अध्यक्ष अंबिका चरण सिंह, उपनिदेशक अभियोजन पृथ्वी सिंह, जय सिंह शक्तावत, रणजीत सिंह लाडपुरा, भंवर सिंह राणावत, सम्पत सिंह सोलंकी, युवराज सिंह राणावत सहित कई प्रबुद्धजन, जनप्रतिनिधि आदि उपस्थित रहे। सम्मेलन की व्यवस्था में भारत सिंह, अक्षय सिंह महुआ, शंकर सिंह सिंगोली, दिनेश सिंह लाडपुरा, राजेन्द्र सिंह अमरतिया, बलवीर सिंह शोभाजी का खेड़ा, कुलदीप सिंह श्यामपुरा, दीपा कंवर, कर्मवीर सिंह और मामू कंवर द्वारा सहयोग किया गया।

बाड़मेर में वार्षिकोत्सव एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

बाड़मेर में श्री राजपूत समाज सेवा समिति द्वारा संचालित श्री बाहड़राव राजपूत छात्रावास का वार्षिकोत्सव एवं प्रतिभा सम्मान समारोह 4 मई को आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अपर जिला कलेक्टर राजेंद्र सिंह चांदावत ने कहा कि वर्तमान युग प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा का है जिसमें सफल होने के लिए अपनी क्षमताओं को विकसित करना होगा। इसके लिए अपने आप को तपाना पड़ेगा, कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। जितनी कठोर आपकी साधना होगी, उतना ही श्रेष्ठ परिणाम होगा। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में किसी प्रकार की नकारात्मकता को अपने भीतर न आने दें। किसी अन्य की लकीर को छोटी करने का प्रयास करने के बजाय अपनी लकीर को बड़ा करने का ही प्रयास करें। समिति के अध्यक्ष कैप्टन हीर सिंह भाटी ने कहा कि समाज में व्याप्त विभिन्न रूढ़ियों, कुप्रथाओं आदि को समाप्त करने के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। हमारे समाज के युवाओं में प्रतिभा की कमी नहीं है, आवश्यकता केवल उन्हें उचित मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देने की है। कार्यक्रम को अपीलीय अधिकारी नवनीत कुमार, आयुक्त श्रवण सिंह राजावत, चितलवाना एसडीएम कर्मवीर सिंह उण्डखा, सहकारिता निरीक्षक गोपाल सिंह सुवाला, जेलर हड़वंत सिंह घोनिया, विरात्रा धाम के अध्यक्ष भैर सिंह ढोक, कैप्टन सगत सिंह परो, कृषि उपनिदेशक पदम सिंह रणधा आदि ने भी संबोधित किया। डूंगर सिंह सणाऊ ने छात्रावास का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। संस्थान के सचिव खुमाण सिंह थूंबली एवं कोषाध्यक्ष हाकम सिंह गेहूं ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन दीप सिंह रणधा एवं तन सिंह घोनिया ने किया। समारोह में प्रतापसिंह महाबार, तनसिंह सणाऊ, कानसिंह सुवाला, इंद्रसिंह धोरीमन्ना, कमलसिंह महाबार, समुद्र सिंह देदूसर, गणपतसिंह (माईल स्टोन अकेडमी), तनवीर सिंह फोगेरा सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org